2101000102050038
EXAMINATION FEBRUARY-MARCH 2024
BACHELOR OF ARTS (FIRST YEAR)
(SECOND SEMESTER) NON -NEP
HINDI - IV - (HINDI – UPNYAS) LEVEL 5
KAMRUPA – RAMANATH TRIPATHI (SUBSIDIARY)

[Time: As Per Schedule] **[Max. Marks:50]**

Instructions:
1. Fill up strictly the following details on your answer book
   a. Name of the Examination: **BACHELOR OF ARTS (FIRST YEAR) (SECOND SEMESTER) NON-NEP**
   b. Name of the Subject: **HINDI - IV – (HINDI-UPNYAS) LEVEL 5 KAMRUPA-RAMANATH TRIPATHI (SUBSIDIARY)**
   c. Subject Code No: **2101000102050038**
2. Sketch neat and labelled diagram wherever necessary.
3. Figures to the right indicate full marks of the question.
4. All questions are compulsory.

Seat No:

Student's Signature

Q.1 निम्नलिखित बहुवैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर लिखिए: **10**

1. कामरूप देश की नारी को क्या कहा जाता है ?
   a) कामना b) कामिनी
   c) कामरूपा d) कामचारिणी

2. झाँसी का किला देखते समय अमित कौन-से उपन्यासकार के उपन्यास के वर्णन में खो गया ?
   a) प्रेमचंद b) निराला
   c) वृंदावनलाल वर्मा d) प्रसाद

3. "कामरूपा" उपन्यास किस संस्कृति को केन्द्र में रखकर लिखा गया है?
   a) असमिया संस्कृति b) तमिल संस्कृति
   c) बांग्ला संस्कृति d) नगा संस्कृति

4. रानू किसे 'संडन हींग' कहती है ?

a) चंदनसिंह b) अमित

c) बालेन्दु साहब d) सक्सेना

5. कौन-सा मंदिर तंत्र - विद्या का केन्द्र रहा है ?

a) सोमनाथ मंदिर b) कामाख्या मंदिर

c) पदमनाभ मंदिर d) साईं मंदिर

Q.2 रमानाथ त्रिपाठी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए | **13**

अथवा

"कामरूपा" उपन्यास में चित्रित धर्म साधनाओं की स्पष्टता कीजिए |

Q.3 'बिहू' उत्सव की सविस्तार चर्चा कीजिए | **13**

अथवा

“कामरूपा” उपन्यास के आधार पर डॉ. अमित का चरित्र-चित्रण कीजिए |

Q.4 **(अ) टिप्पणी लिखिए :** **7**

हाजो मंदिर की उपासना पद्धति |

अथवा

“कामरूपा” उपन्यास का उद्धेश्य |

(ब) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : 7

“मैंने शरीर को मंदिर के समान पवित्र रखा है । तुम्हें इतने अवसर मिले, परंतु पतन की ओर नहीं ले गए | अनेक बौदमाइश....”

अथवा

“यदि औरत का अर्थ 'औरत' है तो मेरी एक ही औरत है । मैंने इसे छोड़कर किसी और को औरत के रूप में न तो जाना है और न जानने की इच्छा या संकल्प है । मैं समाज की मर्यादाओं को मानकर चलनेवालों में हूँ ।"

*****